कर्मवीर कथा

अष्टमः पाठः

(पाठेऽस्मिन् समाजे दलितस्य ग्रामवासिनः पुरुषस्य कथा वर्तते। कर्मवीरः असौ निजोत्साहेन विद्यां प्राप्य महत्पदं लभते, समाजे च सर्वत्र सत्कृतो भवति। कथाया मूल्यं वर्तते यत् निराशो न स्यात्, उत्साहेन सर्वं कर्तुं प्रभवेत्।)

अस्ति बिहारराज्यस्य दुर्गमप्राये प्रान्तरे 'भीखनटोला' नाम ग्रामः। निवसन्ति स्म तत्रातिनिर्धनाः शिक्षाविहीनाः क्लिष्टजीवनाः जनाः। तेष्वेवान्यतमस्य जनस्य परिवारो ग्रामाद् बहिःस्थितायां कुट्यां न्यवसत्। कुटी तु जीर्णप्रायत्वात् परिवारजनान् आतपमात्राद् रक्षति, न वृष्टेः। परिवारे स्वयं गृहस्वामी, तस्य भार्या तयोरेकः पुत्रः कनीयसी दुहिता चेत्यासन्।

तस्माद् ग्रामात् क्रोशमात्रदूरं प्राथमिको विद्यालयः प्रशासनेन संस्थापितः। तत्रैको नवीनदृष्टिसम्पन्नः सामाजिकसामरस्यरसिकः शिक्षकः समागतः। भीखनटोलां द्रष्टुमागतः स कदाचित् खेलनरतं दलितबालकं विलोक्य तस्यापातरमणीयेन स्वभावेनाभिभूतः। शिक्षकं बालकमेनं स्वविद्यालयमानीय स्वयं शिक्षितुमारभत। बालकोऽपि तस्य शिक्षणशैल्याकृष्टः शिक्षाकर्म जीवनस्य परमा गतिरिति मन्यमानो निरन्तरमध्यवसायेन विद्याधिगमाय निरतोऽभवत्। क्रमशः उच्चविद्यालयं गतस्तस्यैव शिक्षकस्याध्यापनेन स्वाध्यवसायेन प्राथम्यं प्राप। 'छात्राणामध्ययनं तपः' इति भूयोभूयः स्वविद्यागुरुणोपदिष्टोऽसौ बालकः पित्रोरर्थाभावेऽपि छात्रवृत्त्या कनीयश्छात्राणां शिक्षणलब्धेन धनेन च नगरगते महाविद्यालये प्रवेशमलभत।

तत्रापि गुरूणां प्रियः सन् सततं पुस्तकालये स्ववर्गे च सदावहितचेतसा अकृतकालक्षेपः स्वाध्यायनिरतोऽभूत्। महाविद्यालयस्य पुस्तकागारे बहूनां विषयाणां पुस्तकानि आत्मसादसौ कृतवान्। तत्र स्नातकपरीक्षायां विश्वविद्यालये प्रथमस्थानमवाप्य स्वमहाविद्यालयस्य ख्यातिमवर्धयत्। सर्वत्र रामप्रवेशराम इति शब्दः श्रूयते स्म नगरे विश्वविद्यालयपरिसरे च। नाजानतां पितरावस्य विद्याजन्यां प्रतिष्ठाम्।

पीयूषम् (58)

वर्षान्तरेऽसौ केन्द्रीयलोकसेवापरीक्षायामपि स्वाध्यवसायेन व्यापकविषयज्ञानेन च उन्नतं स्थानमवाप। साक्षात्कारे च समितिसदस्यास्तस्य व्यापकेन ज्ञानेन, तत्रापि तादृशे परिवारपरिवेशे कृतेन श्रमेणाभ्यासेन च परं प्रीता: अभूवन्।

अद्य रामप्रवेशरामस्य प्रतिष्ठा स्वप्रान्ते केन्द्रप्रशासने च प्रभूता वर्तते। तस्य प्रशासनक्षमतां संकटकाले च निर्णयस्य सामर्थ्यं सर्वेषामावर्जके वर्तेते। नूनमसौ कर्मवीरो व्यतीत्य बाधा: प्रशासनकेन्द्रे लोकप्रिय: संजात:। सत्यमुक्तम् – उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी:।

पदच्छेदाः

| - | पाठे + अस्मिन् |
|-----------|---|
| - | निज + उत्साहेन |
| _ | तत्र + अतिनिर्धनाः |
| - | तेषु + एव + अन्यतमस्य |
| - | नि + अवसत् |
| - | तयोः + एकः |
| - | च + इति + आसन् |
| | तत्र + एकः |
| | तस्य + आपातरमणीयेन |
| - | स्वभावेन + अभिभूतः |
| - | बालकम् + एनम् |
| - | शिक्षितुम् + आरभत |
| गर स जाव | बालक: + अपि |
| IX EIN | शिक्षणशैल्या + आकृष्ट: |
| 18 366 19 | गतिः + इति |
| - | विद्या + अधिगमाय |
| anta stat | गतः + तस्य + एव |
| | - - - - - - - - - - - - - - - - - - - |



पीयूषम् (59)

| निरतोऽभवत् | -2 | निरतः + अभवत् |
|---------------------------|----------|----------------------------------|
| शिक्षकस्याध्यापनेन | 7 | शिक्षकस्य + अध्यापनेन |
| स्वविद्यागुरुणोपदिष्टोऽसौ | = | स्वविद्यागुरुणा + उपदिष्ट: + असौ |
| पित्रोरर्थाभावेऽपि | 7 | पित्रो: + अर्थ + अभावे + अपि |
| कनीयश्छात्राणाम् | - | कनीयस् + छात्राणाम् |
| पुस्तकालये | - | पुस्तक + आलये |
| सदावहितचेतसा | - | सदा + अवहितचेतसा |
| स्वाध्यायनिरतोऽभूत् | | स्व + अध्यायनिरतः + अभूत् |
| पुस्तकागारे | <u> </u> | पुस्तक + आगारे |
| आत्मसादसौ | - | आत्मसात् + असौ |
| अवाप्य | | अव + आप्य |
| नाजानताम् | - | न + अजानताम् |
| पितरावस्य | 453 | पितरौ + अस्य |
| वर्षान्तरेऽसौ | 14 | वर्ष + अन्तरे + असौ |
| समितिसदस्यास्तस्य | 2 | समितिसदस्याः + तस्य |
| श्रमेणाभ्यासेन | - | श्रमेण + अभ्यासेन |
| व्यतीत्य | | वि + अति + इत्य |
| उपैति | - | उप + एति |
| | | पदार्थाः |
| | | |

कठिनजीवनाः

घर्ममात्रात्

जर्जरत्वात्

लघीयसी

क्लिष्टजीवना: आतपमात्रात् जीर्णप्रायत्वात् कनीयसी सामाजिकसामरस्यरसिक: कठिनाई से जीवन जीनेवाले धूप मात्र से लगभग जर्जर होने से छोटी

सामाजिकसमरसताप्रियः -सामाजिक समरसता के पक्षपाती

पीयूषम् (60)

| नवीनदुष्टिसम्पन्नः - | नवदृष्टियुक्तः – | ंनवीन दृष्टि से युक्त |
|----------------------|------------------------|------------------------------------|
| समागतः – | समागतवान् – | आया (आए) |
| खेलनरतम् - | क्रीडारतम् – | खेलने में मग्न |
| विलोक्य | दृष्ट्वा – | देखकर |
| आपातरमणीयेन - | तत्क्षणरम्येन – | तत्क्षण रमणीय, सहज आकर्षक (से) |
| अभिभूत: - | प्रभावितः - | प्रभावित |
| शिक्षितुमारभत | पाठयितुं लग्न: – | मढ़ाने लगा (लगे) |
| स्वाध्यवसायेन - | स्वपरिश्रमेण - | अपने परिश्रम से |
| विद्याधिगमाय - | विद्याप्राप्तये – | विद्यालाभ के लिए |
| निरतः – | तल्लीनः 🛁 | तत्पर |
| प्राथम्यम् – | प्रथमस्थानम् – | प्रथम स्थान को |
| प्राप | अवाप | ्रप्राप्त किया |
| भूयो भूय: | वारंवारम् 👘 👘 | बार बार |
| उपदिष्ट: | प्राग्तोपदेशः/शासितः – | उपदेश प्राप्त |
| अर्थाभावे – | धनाभावे – | धन के अभाव में |
| सावहितचेतसा - | सावधानमनसा | सावधान मन से |
| अकृतकालक्षेपः | अकृतसमयनाशः | समय न गँवानेवाला |
| साक्षात्कारे - | अन्तर्वीक्षायाम् | साक्षात्कार में, इण्टरव्यू में |
| अभूवन् - | अभवन् | 73 |
| प्रीताः – | प्रसन्नाः | - प्रसन्त |
| प्रभूता | अत्यधिका | बहुत अधिक |
| आवर्जनम् - | आकर्षकम् | आकर्षक |
| व्यतीत्य – | नीत्वा | बिताकर |
| सञ्जात: - | अभवत् | हो गया |
| | | 승규는 것이 같은 것을 가지 않는 것을 가지 않는 것이 없다. |

पीयूषम् (61)

| उक्तम् | – कथितम् | | कहा गया है |
|--------|----------------|---|---------------------------|
| उपैति | ् - प्राप्नोति | - | प्राप्त करती है (करता है) |

समास:

व्याकरणम्

| कर्मवीर: | - | कर्मणि वीरः | - | (सप्तमी तत्पुरुष:) |
|-------------------------|------|-------------------------------|----|--------------------|
| निजोत्साहेन | | निज: उत्साह: तेन | - | (कर्मधारयः) |
| विहारराज्यस्य | 121 | विहार: चासौ राज्यम्, तस्य | - | (कर्मधारयः) |
| परिवारजनान् | - | परिवारस्य जनान् | 10 | (षष्ठी तत्पुरुष:) |
| नवीनदृष्टिसम्पन्नः | - | नवीना दृष्टिः यथा सम्पन्नः | - | (तृतीया तत्पुरुष:) |
| सामाजिके सामरस्ये रसिकः | - | सामाजिकसामरस्यरसिकः | - | (सप्तमी तत्पुरुषः) |
| अर्थाभावे | - | अर्थस्य अभावे | - | (षष्ठी तत्पुरुषः) |
| विलष्टजीवनाः | 1 | क्लिष्टं जीवनं येषां, ते | - | (बहुव्रीहिः) |
| खेलनरतम् | - | खेलने रतम् | - | (सप्तमी तत्पुरुषः) |
| दलितबालकम् | - | दलितश्चासौ बालकः, तम् | - | (कर्मधारयः) |
| आपातरमणीयेन | 2 | आपातेन रमणीयः तेन | 4 | (तृतीया तत्पुरुष:) |
| विद्याधिगमाय | | विद्यायाः अधिगमाय | - | (षष्ठी तत्पुरुषः) |
| शिक्षणलब्धेन | | शिक्षणेन लब्धेन | 4 | (तृतीया तत्पुरुष:) |
| सावहितचेतसा | - | सावहिंत चेतः, तेन | - | (कर्मधारय) |
| अकृतकालक्षेपः | 1947 | न कृत: कालस्य क्षेप: येन, स:, | - | (बहुव्रीहि) |
| विश्वविद्यालयपरिसरे | - | विश्वविद्यालयस्य परिसरे | - | (षष्ठी तत्पुरुषः) |
| पुरुषसिंहम् | - | पुरुष: सिंह इव, तम् | - | (कर्मधारयः) |
| शिक्षाविहीना | | े शिक्षया विहीनाः | | (तृतीय तत्पुरुषः) |
| | | | | |

पीयूषम् (62)

प्रकृतिप्रत्ययविभागः

| निरत: | - | नि + रम् + क्त |
|-----------|------|-----------------------------|
| अध्यापनम् | - | अधि + इङ् + णिच् + ल्युट् |
| लब्धम् | - | लभ् + क्त |
| ख्यातिम् | - | ख्यै + क्तिन् (द्वि. ए. व.) |
| कृतवान् | - | कृ + क्तवतु |
| उपदिष्टः | - | उप + दिश् + क्त |
| अभिभूतः | - | अभि + भू + क्त |
| आकृष्ट: | - | आङ् + कृष् + बत |
| ज्ञानेन | - | ज्ञा + ल्युट् (तृ. ए. व.) |
| प्रीता: | - | प्री + क्त (प्र. ब. व.) |
| सञ्जात: | - | सम् + जन् + क्त |
| व्यतीत्य | - 31 | वि + अति + इण् + ल्यप् |
| कृतेन | - | कृ + क्त (तृ. ए, व.) |

अभ्यासः (मौखिकः)

States (20)

CLERCH OF

(ALL - 1 - 01 -

1. एकपदेन उत्तर वदत -

- (क) कर्मवीर: क: अस्ति ?
- (ख) बिहारप्रान्तस्य दुर्गमप्राये प्रान्तरे क: ग्राम: अस्ति ?
- (ग) 'भीखनटोला' ग्रामे शिक्षकः कं दृष्टवान् ?
- (घ) कर्मवीर: रामप्रवेश: कुत्र उन्नतं स्थानं प्राप्तवान् ?
- (ङ) केन कर्मवीर: उन्नतं स्थानमवाप ?

पीयूषम् (63)

अभ्यासः

(लिखितः)

एकपदेन उत्तर लिखत -

1.

2.

3.

- (क) रामप्रवेशस्य ग्रामस्य नाम किम् अस्ति ?
- (ख) भीखनटोलां द्रष्टुं क: आगत: ?
- (ग) बालकः कस्य शिक्षणशैल्याकृष्टः ?
- (घ) स्नातकपरीक्षायां प्रथमस्थानं प्राप्य कस्य ख्यातिमवर्धयत् ?
- (ङ) उद्योगिनं पुरुषसिंहं का उपैति ?

पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत -

- (क) 'भीखनटोला' ग्रामः कुत्र अस्ति ? 👘 👘 👘
- (ख) प्राथमिकविद्यालये कीदृशः शिक्षकः समागतः ?
- (ग) शिक्षक: कं शिक्षितुमारभत ? 👘 👘
- (घ) रामप्रवेश: कस्यां परीक्षायाम् उन्नतं स्थानमवाप ?
- (ङ) कयो: अर्थाभावेऽपि रामप्रवेश: महाविद्यालये प्रवेशमलभत ?
- (च) साक्षात्कारे समितिसदस्याः किमर्थं प्रीताः अभवन् ?
- (छ) रामप्रवेशस्य प्रतिष्ठा कुत्र-कुत्र दृश्यते ?
- (ज) लक्ष्मी: कीदृशं जनम् उपैति ?
- उदाहरणम् अनुसृत्य रक्षति/त्रायते क्रियापदस्य प्रयोगं कृत्वा मञ्जूषातः पदानि चित्वा, तत्र समुचितविभवितं संयोज्य सप्त वाक्यानि रचयत -
 - उदाहरणम् (क) गृहं सूर्यस्य आतपात् मेघस्य वर्षणात् च त्रायते।

(ख) पिता पुत्रं विघ्नात् रक्षति।

पद्मजा, देवदत्तः, रमेशः, करीमः, शैलेशः, दिव्येशः, शत्रुः, पवनः, वेगः, रोगः, वैद्यः, चौरः, प्रहरी, सैनिकः, देशः, आतङ्कवादी, लुण्ठकः, धर्मात्मा, पापम्, सज्जनः, दोषः

पीयूषम् (64)

4. निम्नाङ्कितानां समस्तपदानां विग्रहं कृत्वा समासनामानि लिखत –

(क) अकृतकालक्षेप:

(ख) पुस्तकागारम्

- (ग) स्नातकपरीक्षायाम्
- (घ) द्वितबालकम्
 - (ङ) क्लिष्टजीवनाः
 - (च) नवीनदृष्टिसम्पन्न:
 (क) गणपत्रिक प्राणपत्र के विद्यालय के व विद्यालय के व विद्यालय के व विद्यालय के व विद्यालय के विद्यालय क विद्यालय के व विद्यालय के व
 - (छ) सामाजिकसामरस्यसम्पन्नः
 - (ज) स्वाध्यायनिरतः

5. पठितपाठम् अनुसुत्य निम्नलिखितपदानां पर्यायरूपाणि लिखत -

(उदाहरणम् - पुस्तकालयः - पुस्तकागारम्)

- (क) कठिनजीविता:
 (ख) अकृतसमयनाश:
 (ग) क्षमता
 (घ) जनप्रिय:
 (क) आकर्षकम्
- (च) संलग्नः
 (छ) परिश्रमः
 (ज) धनाभावः
 (इ) सावधानमनसा
 (ज) सद्यः आकर्षकेण

पीयूषम् (65)

योग्यताविस्तारः

प्रस्तुतपाठः कर्मणः परिश्रमस्य महत्त्वं चित्रयति। विद्या अभ्यासानुसारिणी। कस्यापि उन्नतवंशस्य सुरक्षितनिधिः नास्तीयं विद्या। अतः सत्यनिष्ठया मनोयोगेन अध्यवसायेन अर्जिता विद्या सफला यशस्करी च भवति। अयं पाठः उपदिशति यत् निर्धनः, दलितः, शोषितः, वञ्चितः अपि बालः आचार्यस्य सम्यग् निर्देशनेन पठित्वा-लिखित्वा विज्ञो भूत्वा देशस्य विश्वस्य शीर्षस्थः जनः संजायते। सामाजिकविज्ञानस्य शिक्षकाणां सहयोगेन अमेरिकादेशेषु कर्मवीराणां दलित-शोषित-वर्गाणां राजनायकानां चरितानि संगृहणीयात्।

- स्वदेशस्य बाबासाहेबभीमराव-अम्बेदकरस्य जगजीवनरामस्य, कर्पूरीठाकुरस्य तथान्येषाम् उपेक्षितवर्गाणां कर्मवीराणां राजनीतिज्ञानां ज्ञानं प्राप्नुयात्।
- दलितवसतिषु अभियानं चालयित्वा सामाजिकसमरसतायाः वैदिकः सन्देशः श्रावणीयः यथायोग्यं व्यावहारिकः कार्यक्रमः यथा- प्रीतिभोजः, सामूहिकः उत्सवः चादयः आयोजनीयाः।

1676-01094

समरसतामन्त्रः -

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। (क) देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।। (क्रान्समामहत्वार (क) समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्तमेषाम्। (क्रान्स् (क्रान्स)) समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।। (ऋग–10.12.19)

 परिश्रमस्य महत्त्वं संस्कृतगीतेषु दृश्यते। यथा-प्रयत्नेन कार्ये सुसिद्धिर्जनानां

प्रयत्नेन सद्बुद्धिवृद्धिर् जनानाम्। प्रयत्नेन युद्धे जयः स्याज्-जनानां प्रयत्नेन विधेयः प्रयत्नो विधेयः।। प्रयत्नेन धीराः समुद्रं तरन्ति। प्रयत्नेन बीरा गिरीन् लंघयन्ति । प्रयत्नेन मूर्खाः सुयोग्या भवन्ति । प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः॥

5. गीतायाः उपदेशः -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्माते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

3



ŧ.